खनिज उत्पादन की विषिश्टियॉं
अप्रैल 2012 से मार्च 2013

(क) सामान्य :

वित्तीय वर्ष 2012–13 के दौरान देश में खनिज उत्पादन का कुल मूल्य (परमाणु तथा गौण खनिजों को छोड़कर) रू 222747 करोड़ था, जो गत वर्ष की तुलना में 2.58% की सीमांत कमी दर्शाता है। यह प्राकृतिक गैस (उपभुक्त), पेट्रोलियम (अपरिष्कृत), स्वर्ण, लौह अयस्क, टिन सांद्र, डायस्पोर, अग्नि मिट्टी, ग्रेफाइट, कायनाइट, लाईमकंकर, लाईमशैल, अभ्रक (अरिष्कृत), पायरॉक्सिनाइट, सेलेनाइट, सिलिमेनाइट, स्टिएटाइट, वर्मीक्यूलाइट और वोलेस्टोनाइट के उत्पादन में कमी के कारण हैं। तथापि कोयला, लिग्नाइट, बॉक्साइट, क्रोमाइट, सीसा तथा जस्त सांद्र, चांदी, अगेट, एस्बेस्टॉस, बालक्ले, कैल्साइट, क्ले (अन्य), हीरा, डोलोमाईट, डयूनाइट, फेल्साइट, फेल्सपार, केओलिन, लैटेराइट, चूना पत्थर, गेरु, क्वार्ट्ज, क्वार्ट्जाइट एवं बालू (अन्य) जैसे कुछ खनिजों के उत्पादन में वर्ष 2012–13 के दौरान वृध्दि हुई।

(ख) खनिज उत्पादन का सूचकांक :

वर्ष 2012–13 के लिये खनिज उत्पादन का सूचकांक (आधार वर्ष 2004–05 = 100) 125.46 था। यह गत वर्ष 2011–12 पर 2.3% की कमी दर्शाता है जो प्राकृतिक गैस (उपभुक्त), पेट्रोलियम (अपरिष्कृत), ताम्र सांद्र, स्वर्ण, लौह अयस्क, मैंगनीज अयस्क, ऐपेटाइट, फास्फोराइट, सिलिका बालू इत्यादि के उत्पादन में कमी होने के कारण है। वर्ष 2012–13 के दौरान, गत वर्ष की तुलना में खनिज उत्पादन के सूचकांक में ईंधन खनिजों में करीब 1.3% तथा धात्विक खनिजों में 15.8% कमी दर्ज की गई जबकि अधात्विक खनिजों में 5.2% की सकारात्मक वृध्दि परिलक्षित हुई।

(ग) संसूचक खानें :

रिपोर्ट करने वाली खान का आशय एक ऐसी खान से है, जो खनिज संरक्षण और विकास नियमावली की विवरणी के अनुसार वर्ष के दौरान उत्पादन को सूचित करने वाली खान या शून्य उत्पादन सूचित करनेवाली, किंतु ऐसी स्थिति में उपरिभार हटाने, भूगतवेधन, विझिंग, निमड़जन फार्म गर्तन द्वारा गवेषण, खाई खोदना या वेधन जैसे विकास कार्य में व्यस्त खान हो।

वर्ष 2012–13 के दौरान संसूचित खानों की संख्या (परमाणु तथा गौण खनिजों को छोड़कर) गत वर्ष में 3603 की तुलना में बढकर 3691 जितनी हो गई। ईंधन समूह के खनिजों में खानों की संख्या पेट्रोलियम (अपरिष्कृत) तथा प्राकृतिक गैस को छोडकर, 573 थी। धात्विक समूह के खनिजों में खानों की संख्या 635 और अ–धात्विक समूह के खनिजों के मामले में यह 2483 थी। वर्ष 2012–13 में प्रमुख राज्यों में खानों की कुल संख्या आंध्र प्रदेश में 680 या 18.4%, राजस्थान में 488 या 13.2%, गुजरात में 447 या 12.1%, मध्य प्रदेश में 382 या 10.3%, तमिलनाडु में 346 या 9.4%, झारखंड में 283 या 7.7%, कर्नाटक में 205 या 5.6%, छत्तीसगढ़ में 193 या 5.2%, ओडिशा में 184 या 5.0%, महाराष्ट्र में 146 या 4.0% तथा पश्चिम बंगाल में 125 या 3.4% खानें दर्ज की गई। शेष राज्य तथा केंद्रशासित प्रदेशों ने बाकी बची 212 या 5.7% खानें दर्शायी है।

(ग) राज्यवार विश्लेषण :

वर्ष 2012–13 के दौरान राज्यवार परिदृश्य के संदर्भ में, खनिज उत्पादन का मूल्य (परमाणु तथा गौण खनिजों को छोड़कर) आफ–शोर क्षेत्र से सर्वाधिक 53621 करोड़ रूपये या कुल मूल्य का 24.1%, रहा। महत्वानुक्रम में इसके पीछे ओडिशा रू. 29450 करोड़ या 13.2%, राजस्थान रू. 23503 करोड़ अथवा 10.6%, छत्तीसगढ रू. 16600 करोड़ या 7.5%, झारखंड रू. 16516 करोड़ या 7.4%, गुजरात रू. 13046 करोड़ या 5.9%, आंध्र प्रदेश रू. 12292 करोड या 5.5%, असम रू. 11000 या 4.9%, मध्य प्रदेश रू. 10502 करोड़ या 4.7%, पश्चिम बंगाल रू. 8882 करोड़ या 4.0%, महाराष्ट्र रू. 6152 करोड़ या 2.8%, तमिलनाडु रू. 5744 करोड़ या 2.6%, मेघालय रू. 4674 करोड़ या 2.1%, कर्नाटक रू. 4409 करोड़ या 2.0% तथा उत्तर प्रदेश रू. 3151 करोड़ या 1.4% रेह। खनिज उत्पादन के कुल मूल्य का शेष करीब 3205 करोड़ या 1.4% हिस्सा अन्य राज्यों केंद्रशासित प्रदेशों का रहा।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान राज्यों में से आंध्र प्रदेश, बिहार, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, राजस्थान, तमिलनाडु, त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल में खनिज उत्पादन के मूल्य में बढोतरी दर्ज की गई। जबकि अरूणाचल प्रदेश, असम, छत्तीसगढ, गोवा, गुजरात, जम्मू व काश्मीर,

केरल, मेघालय, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और आफ–शोर क्षेत्र में खनिज उत्पादन के मूल्य में गिरावट दर्ज की गई।

(ङ) खनिजवार विश्लेषण :

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान मूल्य के संदर्भ में, खनिज उत्पादन के कुल मूल्य में सर्वाधिक योगदान रू. 71929 करोड़ या लगभग 32.3% कोयले का था। उसके बाद पेट्रोलियम (अपरिष्कृत) रू. 69140 करोड़ या 31.0%, लोह अयस्क रू. 33227 करोड़ या करीब 14.9%, प्राकृतिक गैस (उपभुक्त) रू. 25433 करोड़ या 11.4%, लिग्नाइट रू. 5665 करोड़ या 2.5%, चूना पत्थर रू. 4322 करोड़ या 1.9% तथा क्रोमाइट रू. 2448 करोड़ या 1.1% का क्रम रहा। वर्ष 2012–13 के दौरान खनिज उत्पादन के कुल मूल्य में इन सात खनिजों का सम्मिलित अंशदान 95.1% रहा।

खनिज उत्पादन के कुल मूल्य में ईंधन खनिजों का योगदान 77.3% था। शेष 22.7% योगदान खनिज संरक्षण एवं विकास नियमावली के अंतर्गत आने वाले खनिजों का है जिसमें धात्विक (19.6%) तथा अधात्विक खनिज (3.1%) निहित हैं। खनिज संरक्षण एवं विकास नियमावली, 1988 की परिधि में आनेवाले कुछ महत्वपूर्ण खनिजों के उत्पादन रूझान की संक्षिप्त समीक्षा निम्नवत् हैः

धात्विक खनिजः

बाक्साइटः वर्ष 2012–13 के दौरान बाक्साइट का उत्पादन गत वर्ष की तुलना में 13% वृध्दि दर्ज कराते हुए 15360 हजार टन रहा। कुल उत्पादन में 36% योगदान के साथ ओडिशा बाक्साइट का ने अग्रणी उत्पादक रखा। इसके पश्चात गुजरात (20%), झारखंड और महाराष्ट्र (13% प्रत्येक), छत्तीसगढ (12%) और मध्य प्रदेश (5%) का स्थान रहा। शेष 1% योगदान गोवा, कर्नाटक और तमिलनाडु द्वारा किया गया।

नाल्को, बालको और हिंडालको, देश में बाक्साइट के खनन में शामिल प्रमुख कंपनियां है। वर्ष 2012–13 के दौरान 21 कैप्टिव खानों के साथ कुल उत्पादन में इन कंपनियों का हिस्सा का 65% था। कुल उत्पादन में नाल्को की अकेली पंचपटमाली बाक्साइट खान का योगदान 35% था। कुल उत्पादन में सार्वजनिक क्षेत्र का योगदान लगभग 42% रहा तथा शेष 58% योगदान निजी क्षेत्र द्वारा किया गया। वर्ष 2012–13 के दौरान बाक्साइट की 152 संसूचित खानें थी, जिसमें से 20 खानें सार्वजनिक क्षेत्र तथा 132 खानें निजी क्षेत्र के स्वामित्व में थी।

क्रोमाइटः वर्ष 2012–13 में क्रोमाइट का उत्पादन 2950 टन था, जो गत वर्ष की तुलना में करिब 1% बढ़ गया। कुल उत्पादन में 99.77% के साथ ओडिशा क्रोमाइट का अग्रणी उत्पादक बना रहा। शेष उत्पादन की सूचना कर्नाटक से प्राप्त हुई। वर्ष 2012–13 के दौरान गत वर्ष में 22 खानों की तुलना में 25 संसूचित खाने थीं।

क्रोमाइट खनन में प्रायः 6 प्रमुख उत्पादकों नामतः टाटा स्टील, ओ एम सी, ईम्फेल, फॅकर, बालासोर एलॉयस लि. तथा जे.एस.एल. का वर्चस्व बना रहा। क्रोमाइट के कुल उत्पादन में इन कंपनियों का योगदान 93% था। सार्वजनिक क्षेत्र की तीन कंपनियों नामतः ओ एम सी, एम एम एल तथा आय डी सी ओ एल ने, जिनके पास 11 खानें हैं, मिलकर कुल उत्पादन का 24% का योगदान दिया तथा शेष 76% योगदान निजी क्षेत्र द्वारा किया गया। निजी क्षेत्र में टाटा स्टील, ईम्फेल एवं फेकर जिनके अपने संयंत्र और 10 खानें हैं, ने कुल मात्रा का 60% उत्पादन किया ।

ताम्र अयस्क तथा सान्द्रः वर्ष 2012–13 में ताम्र अयस्क का उत्पादन 3639 हजार टन था जो पिछले वर्ष की तुलना में 3% बढ़ गया। वर्ष 2012–13 के दौरान गत वर्ष की 4 खानों की तुलना में ताम्र अयस्क का उत्पादन सूचित करने वाली सार्वजनिक क्षेत्र की 5 खानें थी। भारत में हिन्दुस्तान का. लि. ताम्र अयस्क एवं ताम्र सान्द्र का एकमात्र उत्पादक था। वर्ष 2012–13 में ताम्र अयस्क में औसत धातु निहितांश 0.89% था।

वर्ष 2012–13 में 124 हजार टन पर ताम्र सान्द्र के उत्पादन में पिछले वर्ष की तुलना में 5% की कमी दर्ज की गई । समीक्षाधीन अवधि के दौरान ताम्र सान्द्र में औसत धातु निहितांश 23.74% था।

स्वर्णः सार्वजनिक क्षेत्र की दि हटटी गोल्ड माइंस क. लि. भारत में प्राथमिक स्वर्ण की प्रमुख उत्पादक थी। इसका कुल उत्पादन में 99% हिस्सा था जबकि केवल नाममात्र उत्पादन मनमोहन मिनरल इंडस्ट्री प्रा.लि. द्वारा संसूचित किया गया। वर्ष 2012–13 में स्वर्ण अयस्क का उत्पादन 471 हजार टन था जो

पिछले वर्ष की तुलना में 4% कम था। चालू वर्ष 2012–13 में विकास कार्यों पर अधिक ध्यान देने से स्वर्ण सिल्लियों की प्राप्ति में भी पिछले वर्ष की तुलना में 28% की कमी हो गई। वर्ष 2012–13 में प्राथमिक स्वर्ण का उत्पादन 1588 किलोग्राम था। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान स्वर्ण का उत्पादन संसूचित करने वाली 4 खानें थीं। तीन खानें कर्नाटक में और एक झारखंड में स्थित थी।

लौह अयस्क: वर्ष 2012–13 में लंप्स, फाईंस तथा सान्द्र मिलकर लौह अयस्क का कुल उत्पादन 136.02 मि. टन रहा जो पिछले वर्ष की तुलना में 19% कम था। ये कमी मुख्यतः कर्नाटक तथा गोवा राज्यों में माननीय उच्चत्तम न्यायालय के आदेश पर खानों की बंदी के कारण हैं। पिछले वर्ष की 313 खानों की तुलना में वर्ष 2012–13 में 270 संसूचित खानें थी। इसके अतिरिक्त पिछले वर्ष में 25 खानों की तुलना में वर्ष 2012–13 में 14 एसोसिएटेड खानों ने भी लौह अयस्क का उत्पादन सूचित किया। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान लोह अयस्क के कुल उत्पादन में 47% योग के साथ ओडिशा का शीर्ष उत्पादक था। इसके पश्चात छत्तीसगढ (21%), झारखंड (13%), गोवा और कनार्टक (8% प्रत्येक) रहे तथा शेष 3 प्रतिशत उत्पादन आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र तथा राजस्थान से सूचित किया गया।

कुल उत्पादन में सार्वजनिक क्षेत्र की 34 खानों का हिस्सा करीब 39% था। जिसमें एनएमडीसी का योगदान 53%, सेल का 41% तथा ओडिशा माइनिंग कारपोरेशन लि. का 6% था । वर्ष 2012–13 के कुल उत्पादन में निजी क्षेत्र का हिस्सा 61% था। इसमें टाटा स्टील लि. ने 19% का योगदान किया। पॉच शीर्ष उत्पादक नामतः एनएमडीसी, सेल, टाटा स्टील, रूंगटा माइंस प्रा. लि. तथा सारडा माइंस प्रा.लि. ने मिलकर देश में लोह अयस्क के कुल उत्पादन का 58% योगदान किया ।

सीसा तथा जस्ता अयस्क और सान्द्र: वर्ष 2012–13 में सीसा तथा जस्ता अयस्क का उत्पादन 8582 हजार टन था जो पिछले वर्ष की तुलना में 7% अधिक हुआ। समीक्षाधीन वर्ष में सीसा और जस्ता अयस्क का उत्पादन संसूचित करने वाली 8 खानें थीं। अयस्क में सीसा और जस्त का औसत धातु निहितांश क्रमशः 1.89% तथा 9.94% था। वर्ष के दौरान सीसा सान्द्र के उत्पादन में 14% तथा जस्त सान्द्र में 6% की बढोतरी हुई। सीसा सान्द्र में औसत धातु निहितांश 56.55% जबकि जस्ता सान्द्र में 50.88% था।

मैंगनीज अयस्क: वर्ष 2012–13 में मैंगनीज अयस्क का उत्पादन 2322 हजार टन था, जो पिछले वर्ष की तुलना में 4% कम था। वर्ष के दौरान मैंगनीज अयस्क का उत्पादन संसूचित करने वाली 165 खानें थी। मॉयल, कुल उत्पादन में 49% योगदान के साथ मैंगनीज अयस्क का सबसे बडा उत्पादक बना रहा। इसके पश्चात टाटा स्टील (13%), आरबीएसएसबीपी एण्ड एफएन दास (10%), एम एल रूंगटा (6%) तथा एस.आर. फॅरो अलॉयज (3%) का क्रम था। पांच प्रमुख उत्पादकों, जिनके पास 25 संसूचित खानें थी, का हिस्सा कुल उत्पादन में करीब 81% था। कुल उत्पादन में सार्वजनिक क्षेत्र की खानों का योगदान करीब 49% था।

गैर–धात्विक खनिज :

बेराइटस: वर्ष 2012–13 में बेराइटस का उत्पादन 1739 हजार टन था जो श्रमिकों की अनुपलब्धता, बाजार में मांग की कमी तथा भारी वर्षा के कारण पिछले वर्ष की तुलना में 2% कम था। कुल उत्पादन का करीब 98%, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम– आन्ध्र प्रदेश मिनरल डवलपमेंट कार्पो. लि. द्वारा एक ही खान का प्ररिचालन करते हुए सूचित किया गया। शेष उत्पादन निजी क्षेत्र की 13 खानों से सूचित किया गया। चालू वर्ष में गतवर्ष की 12 खानों की तुलना में 14 संसूचित खानें थी।

डोलोमाइट: वर्ष 2012–13 में डोलोमाइट का उत्पादन 6713 हजार टन था जो पिछले वर्ष की तुलना में 12% बढ़ गया। पॉच बडे उत्पादकों ने डोलोमाइट का करीब 40% उत्पादन सूचित किया। स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लि. (सेल) डोलोमाइट का प्रमुख उत्पादक रहा, जिसका कुल उत्पादन में 14% योगदान था। इसके बाद राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (8%), साउथ वेस्ट माइनिंग (7%), टाटा स्टील (6%) और बिसरा स्टोन लाइम कं. लि. (4%) का क्रम रहा। वर्ष के दौरान 6 सार्वजनिक क्षेत्र की खानों नें कुल उत्पादन में करीब 29% का योगदान किया। पिछले वर्ष की 194 खानों की तुलना में वर्ष 2012–13 में 179 संसूचित खानें थी। राज्यों में छत्तीसगढ डोलोमाइट का प्रमुख उत्पादक था जिसने कुल उत्पादन

का 28% योगदान किया। इसके बाद आन्ध्र प्रदेश (23%) एवं ओडिशा (13%) का क्रम रहा तथा शेष (36%) योगदान अन्य 6 राज्यों द्वारा किया गया।

अग्नि मिटटी: वर्ष 2012–13 के दौरान कुछ राज्यों में पर्यावरण संम्बधी बाधाओं, श्रमिकों की अनुपलब्धता तथा बाजार में मांग की कमी के कारण अग्नि मिट्टी का उत्पादन पिछले वर्ष की तुलना में 17% की कमी दर्शाते हुए 817 हजार टन था। वर्ष 2012–13 में संसूचित खानों की संख्या पिछले वर्ष की 83 खानों की तुलना में 69 थी। वर्ष के दौरान निजी क्षेत्र की खानों ने फायरक्ले के उत्पादन में 99% योगदान किया।

जिप्सम: वर्ष 2012–13 के दौरान जिप्सम का उत्पादन 3538 हजार टन था जो पिछले वर्ष की तुलना में 11% कम था। राजस्थान इस वर्ष भी उत्पादन में अग्रणी राज्य बना रहा। दोनों वर्षों (2012–13 और 2011–12) में जिप्सम का लगभग संपूर्ण उत्पादन राजस्थान से सूचित किया गया। राजस्थान स्टेट माइनिंग एण्ड मिनरल्स लि. तथा फर्टिलाइजर कारपोरेशन ऑफ इंडिया से सम्बद्ध राजस्थान में स्थित सार्वजनिक क्षेत्र की 30 खानों ने मिलकर उत्पादन का लगभग संपूर्ण योगदान किया।

केओलिन: वर्ष 2012–13 में केओलिन का उत्पादन 3679 हजार टन था जो पिछले वर्ष की तुलना में 20% से अधिक था। पांच प्रमुख उत्पादकों ने कुल उत्पादन में 47% योगदान किया। वे हैं, श्री व्ही पी सोलंकी (24%), इंगलिश इंडियन क्ले लि.(9%), एच. डी. एंटरप्राइजेस (प्रा.) लि. (7%), सतीश वालजी छांगा (4%) तथा मनोज पी. सोलंकी (3%)।

केओलिन का शीर्ष उत्पादक राज्य रहते हुए गुजरात ने कुल उत्पादन में 54% योगदान किया । इसके बाद केरल (24%), राजस्थान (16%) एवं पश्चिम बंगाल (3%) का क्रम रहा जबकि शेष (3%) योगदान आन्ध्र प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक और मध्य प्रदेश ने मिलकर किया। पिछले वर्ष की 105 खानों (5 सार्वजनिक क्षेत्र तथा 100 निजी क्षेत्र) की तुलना में वर्ष 2012–13 में 131 (5 सार्वजनिक क्षेत्र तथा 126 निजी क्षेत्र) संसूचित खानें थी। लगभग संपूर्ण निजी क्षेत्र से सूचित किया गया। कुल उत्पादन में प्रक्रमित केओलिन का अंश 3% रहा।

कायनाइट: वर्ष 2012–13 में पर्यावरण संम्बधी बाधाओं, खनन योजनाओं के नवीनीकरण न होने, श्रमिकों की अनुपलब्धता तथा बाजार में मांग की कमी के कारण कायनाइट का उत्पादन पिछले वर्ष की तुलना में बडे पैमाने में 74% गिरकर 1066 टन था। काइनाइट के उत्पादन में लगभग संपूर्ण योगदान झारखंड (झारखंड मिनरल डवलपमेंट कार्पो. लि.) तथा महाराष्ट्र (महाराष्ट्र स्टेट माइनिंग कार्पो. लि.) में स्थित सार्वजनिक क्षेत्र की खानों ने किया। निजी क्षेत्र की एक खान द्वारा नाममात्र उत्पादन सूचित किया गया। वर्ष 2012–13 में पिछले वर्ष की 3 खानों की तुलना में 4 संसूचित खानें थी ।

फास्फोराइट: वर्ष 2012–13 में फास्फोराइट का उत्पादन 2124 हजार टन था जो आरएसएमएमएल, राजस्थान की झामरकोटरा खान के कृषिंग संयंत्र में अयस्क के कम उठाव के कारण पिछले वर्ष की तुलना में 6% घट गया। वर्ष के दौरान कुल उत्पादन का करीब 91% योग कैप्टिव सार्वजनिक क्षेत्र की खानों द्वारा तथा शेष हिन्दुस्तान झिंक लि. की एक खान द्वारा सूचित किया गया। वर्ष 2012–13 के दौरान 5 संसूचित खानें थीं, जिसमें चार कैप्टिव तथा एक नान–कैप्टिव थीं।

सिलिमेनाइट: वर्ष 2012–13 में सिलिमेनाइट का उत्पादन 43736 टन था जो अपक्व बालू की मात्रा में कमी तथा संयंत्र निष्कर्षण के कारण पिछले वर्ष की तुलना में 26% घट गया। सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनी इंडियन रेअर अर्थ लि. ने 3 खानों, दो केरल में और एक ओडिशा में, का संचालन करते हुए कुल उत्पादन का 39% का योगदान दिया। एक अन्य सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनी महाराष्ट्र स्टेट माइनिंग कार्पो. लि. द्वारा नाममात्र उत्पादन सूचित किया गया। सिलिमेनाइट का शेष उत्पादन आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में निजी क्षेत्र की खानों द्वारा क्रमशः गार्नेट (अपघर्षी) एवं कायनाइट के सह खनिज के रुप में सूचित किया गया। वर्ष 2012–13 के दौरान पिछले वर्ष की 4 खानों की तुलना में 5 संसूचित खानें थी।

चूना पत्थर: वर्ष 2012–13 में चूना पत्थर का उत्पादन में 280 मिलियन टन था जो पिछले वर्ष की तुलना में 7% बढ़ गया। पिछले वर्ष में 716 खानों की तुलना में वर्ष के दौरान 723 संसूचित खानें थीं। भारत में कुल मिलाकर 325 कैप्टिव खानें थी जिनका कुल उत्पादन में योगदान करीब 88% था। वर्ष 2012–13 के

दौरान पिछले वर्ष 30 सार्वजनिक एवं 686 निजी क्षेत्र की खानों की तुलना में 28 सार्वजनिक एवं 695 निजी क्षेत्र की संसूचित खानें थीं। सार्वजनिक क्षेत्र की खानों का उत्पादन में हिस्सा गत वर्ष में 5% की तुलना में 4.5% था।

राज्यवार उत्पादन में आंध्र प्रदेश ने 22% योगदान किया इसके बाद राजस्थान (19%), मध्य प्रदेश (12%), गुजरात तथा तमिलनाडु (प्रत्येक 9%), कर्नाटक (8%) एवं छत्तीसगढ (7%) का क्रम रहा तथा शेष (14%) योगदान अन्य राज्यों का रहा। कुल उत्पादन के लगभग 54% की सूचना प्रमुख उत्पादकों नामतः अल्ट्रा टेक सीमेंट लि. (15%), अंबुजा सीमेंट, जयप्रकाश एसोसिएटस लिमिटेड और ए सी सी लिमिटेड (प्रत्येक 7%), श्री सीमेंट लिमिटेड (5%), द इंडिया सिमेन्ट लिमिटेड (4%), मद्रास सीमेंट लिमिटेड, डालमिया सीमेंट (भारत) लिमिटेड एवं बिनानी सीमेंट लिमिटेड (प्रत्येक 3%) से सूचित की गई।

मैग्नेसाइट: वर्ष 2012–13 के दौरान मैग्नेसाइट का उत्पादन 213 हजार टन था जो पिछले वर्ष की तुलना में 5% कम था। पिछले वर्ष की 11 खानों की तुलना में वर्ष 2012–13 में संसूचित खानों की संख्या 14 थीं। वर्ष 2012–13 के दौरान कुल उत्पादन में 70% योगदान के साथ तमिलनाडु शीर्ष उत्पादक राज्य बना रहा। शेष 30% की सूचना संयुक्त रूप से कर्नाटक और उत्तराखण्ड से प्राप्त हुई।

पांच प्रमुख उत्पादकों ने कुल उत्पादन में 93% योगदान किया तथा 7% का योगदान छोटे उत्पादकों द्वारा किया गया । प्रमुख उत्पादकों में तमिलनाडु मैग्नेसाइट लि. ने 52%, अल्मोडा मैगनेसाइट लि. ने 19%, एस. सुंदरराजन ने 13%, एन बी मिनरल्स ने 6% और डालमिया मैग्नेसाइट कार्पो. लि. ने 3% का योगदान किया। वर्ष 2012–13 में सार्वजनिक क्षेत्र की खानों ने मैग्नेसाइट के कुल उत्पादन में पिछले वर्ष के 75% की तुलना में 74% योगदान किया।

सिलिका बालु: वर्ष 2012–13 के दौरान सिलिका बालू का उत्पादन 3690 हजार टन था जो बाजार में मांग की कमी तथा कुछ खानों में श्रमिकों की अनुपलब्धता के कारण पिछले वर्ष की तुलना में करीब 24% से घट गया। वर्ष 2012–13 में पिछले वर्ष की 149 खानों की तुलना में खानों की संख्या 140 थी। उत्पादन का करीब 97% की निजी क्षेत्र की 136 खानों से सूचित किया गया तथा शेष 3% सार्वजनिक क्षेत्र की 4 खानों द्वारा सूचित किया गया। वर्ष 2012–13 के दौरान आन्ध्र प्रदेश और गुजरात में संयुक्त रूप से कुल उत्पादन का करीब 68% का योगदान किया। वर्ष 2012–13 के दौरान भवानी मिनरल्स (13%), मो. शेरखान पठान (8%), कुमारस्वामी सिलिका माईंस (6%), अलिमिया आय. सैयद (4%) तथा निशिता माईंस एण्ड मिनरल्स (3%) सिलिका बालू के प्रमुख उत्पादक रह से।

स्टिएटाइट: वर्ष 2012–13 में स्टिएटाइट का उत्पादन 939 हजार टन था जो पिछले वर्ष की तुलना की तुलना में 6% घट गया। पांच प्रमुख उत्पादकों ने स्टिएटाइट के कुल उत्पादन ने करीब 58% का योगदान किया। ये उत्पादक हैं – एसोसिएटेड सोपस्टोन डिस्ट्रीब्यूशन कं. (प्रा.) लि. (26%), उदयपुर मिनरल्स डवलपमेंट सिंडीकेट (प्रा.) लि. (22%), रतन लाल डिडवानिया (4%), नलवाया मिनरल इंडस्ट्रीज प्रा. लि. तथा राजस्थान मिनरल्स एण्ड कं. (प्रत्येक 3%)। वर्ष के दौरान स्टिएटाइट का उत्पादन सूचित करने वाली पिछले वर्ष की 123 खानों की तुलना में 118 खानें थी ।

कुल उत्पादन में करीब 81% योगदान के साथ राजस्थान स्टिएटाइट का अग्रणी उत्पादक राज्य था। इसके बाद उत्तराखण्ड 10% तथा आन्ध्र प्रदेश 8% का क्रम रहा। स्टिएटाइट का शेष उत्पादन छत्तीसगढ, गुजरात, झारखंड, मध्य प्रदेश तथा तमिलनाडु से सूचित किया गया।

*****